



प्रमुख आचार्यों के काव्य प्रयोजन: एक अध्ययन

बलदेव राम

सह आचार्य, हिन्दी, राजकीय कन्या महाविद्यालय, मेड़ता सिटी

प्रयोजन का अर्थ है— उद्देश्य। इस संसार में कोई भी वस्तु निष्प्रयोजन नहीं होती है। हर वस्तु का कोई न कोई प्रयोजन होता है। काव्य—रचना का भी कोई—न—कोई उद्देश्य रहता है। कवि या लेखक का काव्य—रचना के पीछे जो उद्देश्य या प्रयोजन होता है। वही उद्देश्य काव्य—प्रयोजन कहा जाता है। किसी—न—किसी प्रयोजन वश कवि रचना को आकार देता है जिसकी सिद्धि के लिए वह सतत प्रयत्नशील रहता है। इस विषय की मीमांसा संस्कृत और हिन्दी के आचार्यों ने बड़ी गम्भीरता के साथ की है।

काव्य प्रयोजन काव्य प्रेरणा से बिल्कुल अलग है क्योंकि काव्य प्रेरणा का आशय है काव्य की रचना के लिए प्रेरित करने वाले तत्व जबकि काव्य प्रयोजन का अर्थ है काव्य रचना के अनन्तर (बाद में) प्राप्त होने वाले लाभ।

आचार्य भरतमुनि से लेकर वर्तमान काल तक काव्य शास्त्रियों ने यह विचार किया है कि काव्य की रचना के क्या प्रयोजन हो सकते हैं?। अनेक प्रयोजनों का चयन इन आचार्यों ने किया था, जिनमें से एक या अनेक प्रयोजनों को लक्ष्य करके कवि काव्य की रचना कर सकता है। कवि किसी विशेष प्रयोजन बाबत काव्य रचना करता है, लेकिन अन्य फल भी उसको स्वतः प्राप्त होना माना गया है।

संस्कृत—आचार्यों द्वारा निर्दिष्ट काव्य प्रयोजन

01. **भरत मुनि**— नाट्य—शास्त्र के रचयिता भरत मुनि ने नाटक के प्रयोजनों पर विचार करते हुए लिखा है:—

धर्म्यं यशस्यं आयुष्यं हितं बुद्धिं विवर्धनम्।

लेको उपदेश जननम् नाट्यमेतद् भविष्यति॥

यह धर्म, यश तथा आयु को बढ़ाता है और संसार को उपदेश देने वाला है।

भरतमुनि के इन प्रयोजनों में भौतिक प्रयोजनों का व्यापक स्तर पर उल्लेख है, किन्तु काव्य का प्रधान उद्देश्य आनन्द प्राप्ति है जिसका उल्लेख यहां नहीं किया गया। एक अन्य स्थान पर उन्होंने नाटक का उद्देश्य दुःखार्त व्यक्ति को सुख और शांति की प्राप्ति करना बताया है।

02. **भामहः**— आचार्य भामह ने काव्य प्रयोजनों की चर्चा करते हुए लिखा है:—

धर्मार्थं कामं मोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।

करोति कीर्ति प्रीतिञ्च साधुकाव्य निबन्धनम् ।।

अर्थात् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति कलाओं में निपुणता के साथ-साथ उत्तम काव्य से कीर्ति और प्रीति (आनन्द) की भी प्राप्ति होती है। भामह के प्रयोजन व्यापक हैं तथा इनमें कवि और पाठक दोनों के काव्य प्रयोजनों को शामिल किया है।

03. **आचार्य वामनः**—काव्यं सदद्रष्टा द्रष्टार्थं प्रीति—कीर्ति—हेतु त्वात् ।

काव्य —रचना के यश और आनन्द प्रयोजन बताए गए हैं। काव्य की रचना से यश में वृद्धि होती है और बुरी कविता करने वाला अपकीर्ति का भागी होता है।

04. **मम्मटः**—काव्य—प्रयोजनों में आचार्य मम्मट महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में गिने जाते हैं। इनके अनुसार छः काव्य—प्रयोजन हैं।

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये ।

सद्यःपरिनिर्वृतये कान्ता सम्मिततयोपदेशयुजे ।।

अर्थात् काव्य से यश की प्राप्ति, अर्थ उत्पादकता, लौकिक व्यवहार की जानकारी, अमंगल का निवारण, पढ़ने के साथ-साथ ही परमानन्द की प्रतीति कराने वाला तथा कान्ता (प्रिया) के समान उपदेश करने वाला होता है।

01. **यश प्राप्तिः**—इस संसार में काव्य—रचना कर कवियों ने अक्षय यश प्राप्त किया है। आज कालजयी रचनाकार मर कर भी अमर हैं। कालिदास, भवभूति, तुलसीदास, सूरदास, कबीर, रामचन्द्र शुक्ल, जायसी ऐसे ही मूर्धन्य साहित्यकार हैं। महाकवि भर्तृहरि ने बड़ी मार्मिकता से लिखा है कि उन रससिद्ध कवीश्वर लोगों की जय हो, जिनके यश रूपी शरीर में न बुढ़ापे का डर है और न मृत्यु का भय है।

इसी प्रकार महान कवि मलिक मो० जायसी ने भी पदमावत में यह स्वीकार किया है कि मैं चाहता हूँ कि मैं अपनी रचना द्वारा संसार में जाना जाऊँ।

औमन जान कवित्त अस कीन्हा ।

मकु यह रहे जगत महुँ चीन्हा ।।

02. **अर्थ (धन) की प्राप्ति**—कविगण जिस राजा के आश्रय में रहते उसकी कीर्ति का बखान किया करते थे उसकी एवज में उन्हें धन की प्राप्ति उपहार स्वरूप मिलती थी। बाण भट्ट ने श्रीहर्ष से अपने काव्य ग्रन्थों के द्वारा अतुल सम्पत्ति प्राप्त की, इसका साक्षी तत्कालीन इतिहास है।

03. **लौकिक (सांसारिक) व्यवहार का ज्ञान**—इन रचनाओं से पाठकों को सांसारिक ज्ञान की प्राप्ति होती है। रामचरित मानस में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के चरित को बानगी स्वरूप पेश किया जा सकता है। इसमें सर्वत्र मर्यादा की बात कही गई है।

04. **अमंगल का निवारण**—कविगण काव्य रचना में देवताओं की स्तुति करते हैं जिससे देवता प्रसन्न होकर रचयिता के अमंगल का नाश करते हैं। कहा जाता है कि मयूर भट्ट का कुष्ठ रोग सूर्य की स्तुति में विरचित सूर्य शतक नामक काव्य प्रणयन से नष्ट हुआ। गोस्वामी

तुलसीदास के बारे में कहा जाता है कि उनके बाहु में बड़ी पीड़ा थी जिसका निवारण उन्होंने हनुमान बाहुक नामक उद्भट काव्य ग्रन्थ लिखकर किया।

05. परम आनन्द की सद्यः अनुभूति—यह सबसे मुख्य प्रयोजन है। काव्य के पढ़ते ही इसका आस्वाद होने लगता है और पाठक अपने को एक अलौकिक आनन्द का अनुभव करता हुआ पाता है। यह सकल मौलिभूत प्रयोजन है।

06. कांता (प्रिया) के समान उपदेश देने वाला—

उपदेशों की तीन श्रेणियाँ—01. प्रभू सम्मित उपदेश

02. मित्र सम्मित उपदेश

03. कांता सम्मित उपदेश

कांता सम्मित उपदेश हितकर भी है, रुचिकर भी है और जिसकी अवहेलना भी नहीं की जा सकती। जिस प्रकार कांता (प्रेयसी) मधुर हावभावों से पुरुष को मुग्ध करके उसे अपनी इच्छानुकूल नीतिमार्ग पर ले जाती है, उसी प्रकार काव्य भी मधुर कथा के द्वारा उच्च आदर्शों की शिक्षा देता है।

05. अग्निपुराण कृत प्रयोजन—त्रिवर्ग साधन नाटयम्।

इसके अनुसार चार पुरुषार्थों की जगह त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ और काम) ही काव्य के प्रयोजन हैं।

06. कविराज विश्वनाथ के अनुसार प्रयोजन—कविराज विश्वनाथ के अनुसार चतुर्वर्ग (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) काव्य प्रयोजन है। इनके अनुसार काव्य—प्रयोजन जो हैं वे काव्यशास्त्र के भी हैं।

हिन्दी—आचार्यों द्वारा काव्य—प्रयोजन

01. गोस्वामी तुलसीदास—रामचरित मानस में दो स्थानों पर काव्य—प्रयोजनों की चर्चा की गई है:—

01. स्वान्तःसुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा।

02. कीरति भनिति भूति भल सोई। सुरसरि सम सब कह हित होई।

स्वान्तःसुख और लोक मंगल दो प्रयोजन तुलसीदास के अनुसार हैं। वही कविता श्रेष्ठ होती है जो गंगा के समान सबका हित करने वाली हो।

रामचरित मानस में अन्यत्र लिखते हैं—

जस सम्पति, आनन्द अति दुखिन डारै खोई।

होत कवित ते चतुराई, जगत काम बस होई॥

02. **मैथिलीशरण गुप्त का मत**—गुप्त जी काव्य का प्रयोजन केवल मनोरंजन नहीं अपितु उपदेश स्वीकार करते हुए लिखते हैं—
 केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।
 उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।
 इसी प्रकार वे कहते हैं कि कला लोकहित के लिए है वही ठीक है कला कला के लिए ठीक नहीं होती—
 मानते हैं जो कला को बस कला के अर्थ ही।
 स्वार्थिनी करते कला को व्यर्थ ही।
03. **देवदन्त का मत**—देवदन्त भामह के मत से सहमति जताते हुए यश को ही काव्य का प्रयोजन मानते हैं।
04. **भिखारी दास का मत**—यश प्राप्ति, फल प्राप्ति और आनन्द प्राप्ति को काव्य प्रयोजन के रूप में स्वीकार किया गया है।
05. **मुंशी प्रेमचन्द का मत**—साहित्य का उद्देश्य लोक मनोरंजन करना नहीं है। यह काम तो भाटों, मदारियों, विदूषकों और मसखरों का है। साहित्यकार का पद इन सबसे बहुत ऊपर है। साहित्यकार का काम हमारे (लोक) विवेक को जागृत करने का है और वे हमारी आत्मा को तेजोदीप्त करता है।
06. **जयशंकर प्रसाद का मत**—कालजयी रचना कामायनी के रचनाकार प्रसाद के अनुसार मनोरंजन और शिक्षा प्रयोजन है।
07. **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल**— कविता का अंतिम लक्ष्य जगत में मार्मिक पक्षों का प्रत्यक्षीकरण करके उसके साथ मनुष्य हृदय का सामंजस्य स्थापन है अर्थात् शुक्लानुसार रस की अनुभूति काव्य—प्रयोजन है।
 कविता को केवल मनोरंजन का विषय नहीं मानते हुए लिखते हैं—
 मन को अनुरंजित करना उसे सुख या आनन्द पहुँचाना ही यदि कविता का अंतिम लक्ष्य माना जाए तो कविता ही विलास की एक सामग्री हुई। काव्य का लक्ष्य है जगत और जीवन के मार्मिक पक्ष को गोचर रूप में लाकर सामने रखना।
08. **आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी का मत**—आत्मानुभूति ही काव्य का प्रयोजन है। जिससे रचना से वास्तविक अनुभूति नहीं मिलती वह रचना काव्य कैसे हो सकती?
09. **आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का मत**—
 मैं साहित्य को मनुष्य की दृष्टि से देखने का पक्षपाती है।

इनके अनुसार मानव हित काव्य प्रयोजन है।

उक्त काव्य प्रयोजनों से यह निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं—

01. काव्य प्रयोजन और काव्य प्रेरणा दोनों अलग-अलग हैं।
02. आनन्द प्राप्ति काव्य का प्रधान प्रयोजन है जिसे रसानुभूति से प्राप्त किया जाता है।
03. प्रत्येक व्यक्ति का काव्य प्रयोजन अलग-अलग है।

काव्य प्रकाश के रचनाकार आचार्य मम्मट द्वारा निर्दिष्ट काव्य प्रयोजन उचित,व्यवहारिक,तार्किक और व्यापक है अतः ज्यादातर उन्हीं को वरीयता देते हैं।

सन्दर्भ :-

01. काव्यालंकार सूत्रवृत्ति—आचार्य वामन।
02. काव्य प्रकाश —आचार्य मम्मट।
03. साहित्य दर्पण—आचार्य विश्वनाथ।
04. अलंकार—छंद पारिजात —प्रो.रमेश चन्द्रा डॉ.हेमलता।
05. काव्यशास्त्र—डॉ.भागीरथ मिश्र।
06. नाट्य शास्त्र,सुधा रस्तोगी चौखम्भा कृष्णदास अकादमी वाराणसी,संस्करण—1999।
07. दशरूपक,डॉ.श्री निवास शास्त्री,साहित्य भण्डार मेरठ,संस्करण—1969
08. साहित्य दर्पण,डॉ.कमला देवी,प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद,संस्करण—2017।
09. काव्य प्रकाश:प्रथम उल्लास,द्वितीया कारिका,वृत्तिभाग।
10. काव्य तत्व विवर्क: काव्यप्रयोजनम्,कारिमा,1-4
11. अभिनव काव्यालंकार सूत्रम् हिन्दी टीका।
12. भारतीय काव्यशास्त्र:योगेन्द्र प्रताप सिंह —लेक भारती प्रकाशन,इलाहाबाद।
13. काव्यांग विवेचन—डॉ.भागीरथ मिश्र एवं डॉ.बलभद्र तिवारी,स्मृति प्रकाशन,इलाहाबाद।
14. भारतीय काव्यशास्त्र—डॉ.तारक नाथ,बाली वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली।